दिलमुन

सिंधु घाटी की सभ्यता पर आधारित उपन्यास

याक़ूब यावर

दिलमुन

(सिन्धु घाटी की सभ्यता पर आधारित उपन्यास)

याक़ूब यावर

डॉ. इरावती

(16.09.1947 - 02.03.2016)

पूर्व-अध्यक्ष,

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,

वसंत महिला महाविद्यालय (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), राजघाट, वाराणसी

की यादों को समर्पित

अनुक्रम

प्राक्कथन	4
सूर्यास्त	11
नव-प्रभात	16
देवानइ	24
प्रवास	49
गोमल की घाटी	60
सन्तान-प्राप्ति नृत्य	74
अभिशप्त बस्ती	93
तारकी	108
हरियूपिका	117
अपरिचित नगर	136
पुत्रीपाल	154
दिलमुन	167
नया नगरपालक	182
षड्यंत्र	198
अंतिम निर्णय	209
उपसंहार	225

प्राक्कथन

(1)

सिन्धु घाटी की सभ्यता की खोज बीसवीं सदी की सब से महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से है। यह सभ्यता सम्भवतः 3000 ईसापूर्व से 1500 ईसापूर्व के मध्य विकसित हुई और आधुनिक पाकिस्तान-ईरान सीमा से हिमालय की घाटी और कैम्बे की खाड़ी तक इसका विस्तार हुआ। इस सभ्यता की भौतिक संस्कृति के सम्बन्ध में अब तक बहुत कुछ ज्ञात हो चुका है। यथा – योजनाबद्ध शैली में निर्मित नगर, सड़कें, आवास, कुएं, स्नानागार, भाण्ड, पात्र, औज़ार, मुक्ता, आभूषण, रत्न, वस्त्र, पाषाण, मुहरें, धातु और पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ, आदि हमें इस सभ्यता के बारे में बताती हैं। परन्तु इतना होते हुए भी हमें इस सभ्यता के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और बौद्धिक जीवन के बारे में बहुत कम ज्ञात है और जो कुछ है वह अनुमान पर आधारित है। इस युग की लिपि पढ़ी नहीं जा सकी है। परन्तु यदि पढ़ भी ली जाए तो मोहरों या अत्यंत पतले ताँबे के पत्र पर लिखे लेख इतने छोटे हैं कि इनकी सहायता से इस सभ्यता का विस्तृत इतिहास ज्ञात होना सम्भव नहीं है।

प्रस्तुत उपन्यास की पृष्ठभूमि यही सभ्यता है। इस उपन्यास में वर्णित विभिन्न तथ्यों को समझने के लिये आवश्यक प्रतीत होता है कि हम अपने पाठकों से इसके ऐतिहासिक तथ्यों की संक्षिप्त रूपरेखा का परिचय करा दें, जिससे उन्हें इसके पढ़ते समय कोई उलझन न हो।

(2)

इस उपन्यास में मोहन जोदड़ो नगर का नाम 'दिलमुन' है। सैमुएल एन क्रेमर जैसे विद्वानों ने सुमेरियन साहित्य में उल्लिखित 'दिलमुन' का समीकरण सैन्धव प्रदेश से किया है। इस साहित्य में जल-प्लावन की कथा में 'दिलमुन' का उल्लेख मिलता है। यह वह नगर था जहां ज्यूसुद्र (सुमेरियन मनु) ले जाया गया था। इसके लिये कहा गया है कि 'यह वह स्थान है जहां से सूर्य उदित होता है', अतः इसे सुमेर के पूर्व में कहीं होना चाहिए। दिलमुन का वर्णन सुमेरियन साहित्य में जिस प्रकार आया है, वह उसका सैन्धव सभ्यता का एक प्रमुख नगर होना बताता है।

मोहन जोदड़ो (मुर्दों का टीला) का आधुनिक नाम कभी इस नगर का प्राचीन नाम रहा हो, सम्भव नहीं है। अतः क्रेमर के तर्कों के आधार पर इस उपन्यास में मोहन-जोदड़ो का प्राचीन नाम दिलमुन कल्पित किया गया है।

सैन्धव सभ्यता का दूसरा प्रमुख नगर 'हड़प्पा' है। श्री अरुण ने अपने 'भारतीय पुरा-इतिहास कोश' में हड़प्पा के प्राचीन नाम के लिये 'हरियूपिका' संज्ञा का प्रयोग किया है अतः इस उपन्यास में हड़प्पा के इस नाम का यही आधार है।

(3)

सैन्धव सभ्यता की सामाजिक संरचना का अनुमान इस सभ्यता से संबन्धित उत्खनित सामग्री के ही आधार पर होता है अतः ईसा से 3000 वर्ष पूर्व सैन्धव सभ्यता के युग में भ्राता-भगिनी विवाह की प्रथा थी अथवा नहीं यह पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित रूप से नहीं कहा जा सकता। परन्तु इस प्रथा के अस्तित्व के परोक्ष प्रमाण अवश्य मिलते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में 'यम-यमी संवाद' में यमी अपने भाई यम पर आसक्त होकर कहती है कि वह उसके साथ 'समान शैय्या पर रमण' चाहती है। किन्तु इसके उत्तर में यम उसे समझता है कि यह 'अभ्रातोचित' है। प्रत्युत्तर में यमी कहती है कि विश्व की सृष्टि करने वाले त्वष्टा ने उन दोनों की रचना दंपत्ति रूप में ही की है और उनके नियम अकाट्य हैं। यम पुनः उसे मित्रवरुण के नियमों के विरुद्ध बता कर अव्यवहारिक सिद्ध करता है। यह संवाद इस तथ्य का संकेत देते हैं कि पूर्व-आर्य युग में भ्राता-भगिनी विवाह प्रथा का अस्तित्व रहा होगा किन्तु यह आर्यों की नैतिकता के विरुद्ध होने के कारण उन्हें ग्राह्य नहीं हुआ होगा।

यह सर्व-विदित है कि ऋग्वैदिक रुद्र की कल्पना प्रकृति के रूप के दैवीकरण से हुई किन्तु यहाँ रुद्र का सम्बन्ध योग, वृषभ या नाग से नहीं है, जब कि परवर्ती शिव की कल्पना में इन तीनों का महत्वपूर्ण स्थान है। सैन्धव सभ्यता के युग में ज्ञात 'पुरुष-देवता' (शिव से समीकृत) की अवधारणा में भी उसका तीनों से निकट सम्बन्ध ज्ञात होता है। अतः सम्भव है कि परवर्ती शिव के कल्पना आर्य एवं अनार्य परम्पराओं के समीकरण का परिणाम हो। सैन्धव सभ्यता के युग में 'मातृ-देवी' की उपासना भी इस पुरुष देवता की भाँति ही लोकप्रिय और सम्मानित थी। इसने ही सम्भवतः परवर्ती युग में 'शक्ति' की विचारधारा को जन्म दिया जिसका सम्बन्ध शिव से जुड़ा। यजुर्वेद में एक स्थान पर रुद्र और अंबिका (अम्बा माता) का एक साथ उल्लेख है और वहाँ वह रुद्र की भगिनी कही गई है। इस प्रसंग को छोड़ कर समस्त ब्रहमणधर्मी साहित्य में वह रुद्र की पत्नी ही कही गई है। अतः सम्भव है कि आर्यों से पूर्व अनार्य धर्म या सैन्धव धर्म में रुद्र और अंबिका (पुरुष-देवता और मातृ-देवी) भाई बहन और पति-पत्नी दोनों रहे हों और तत्पश्चात आर्यों ने इसे अस्वीकार कर दिया हो।